DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo. 9415376545

B.A PART-I (HONS.) Paper II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Lecture No. 23 Date. 11-05-2020

गाँधी-दर्शन का महत्व

भारत को गाँधी की क्या देन है? आधुनिक विश्व के परिप्रेक्ष्य में गाँधी-दर्शन का क्या विशिष्ट महत्व है? ये प्रश्न अत्यन्त सरल प्रतीत होते हैं किन्तु इनका सही उत्तर देना पाना उतना आसान नहीं है। उन्होंने लगभग 50 वर्षों तक जो कार्य किए उनका समानांतर ढूँढ़ना लगभग असंभव है। किसी महान व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही आकलन प्रायः तुलनात्मक दृष्टि से किया जाता है। गाँधी जी का व्यक्तित्व किसी भी अन्य इतिहासपुरुष के व्यक्तित्व से नहीं आँका जा सकता। दूसरी तरफ गाँधी-दर्शन एक ऐसा दर्शन है जो जीवन के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोड़ता। वे अद्वैत दर्शन की भी बात करते हैं और मूँगफली के महत्व की भी बात करते हैं। वे किसी की बात काटते नहीं फिर भी अपनी बात कह ले जाते हैं। ऐसे व्यक्ति की अवधारणाओं का मूल्यांकन कैसे किया जाय। यह भी कह पाना मुश्किल है। उनके दर्शन का महत्व के बारे में विचार-विमर्श करना आसान नहीं है। एक समय-सीमा में कुछ बातों की ओर संकेत कर देने मात्र से संतोष करना पड़ेगा।

एक बार मार्टिन लूथर किंग ने कहा था कि उन्होंने गाँधी से आदर्शवादिता भी सीखी और आदर्शों को जीवन में ढालने की तकनीक भी। यह बात बहुत सारगर्भित है। बहुत ही कम व्यक्ति ऐसे हुए हैं जो आदर्शवाद को यथार्थ की भूमि में स्थापित कर सके। चाहे इस बात में जितना भी विरोधाभास हो, गाँधी की केवल एक ही संज्ञा दी जा सकती है कि वे नैतिक यथार्थवादी थे। उनका हर सिद्धान्त यथार्थ की पहचान से

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)

Mo - 9415376545

B.A PART-I (HONS.) Paper II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Date.11-05-2020

से शुरु होती है।

गाँधी ने धर्म शब्द की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने धर्म को पंथों की संकीर्ण परिभाषाओं से मुक्त किया। शायद वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म को नैतिक आचरण के रूप में समझने का प्रयत्न किया। धर्म का अर्थ न हिन्दू धर्म है, न इस्लाम, न ईसाई या कोई अन्य। धर्म तो मानव के अंदर निहित शक्ति की अभिव्यक्ति है।

गाँधी शायद आधुनिक भारत के पहले राजनीतिक विचारक थे जिन्होंने धर्म और राजनीति का समन्वय किया। वे धर्मविहीन राजनीति को बेईमानी मानते थे। कोई भी राजनैतिक कार्यकलाप वांछनीय नहीं है जब तक वह धर्म अथवा नैतिकता के अनुरूप न हो।

'रामराज्य' की परिकल्पना संभवतः गाँधी की महत्वपूर्ण संकल्पना इस व्यवस्था की आधारशिला समानता और गाँधी के विचारानुसार इसी का पर्याय स्वतंत्रता रामराज्य "यूटोपिया" नहीं; गाँधी जी का कहना था कि अगर सर्वोदय के सिद्धान्त का अनुसरण किया जाय तो रामराज्य स्वयं ही स्थापित हो जाएगा।

गाँधी जी एक महत्वपूर्ण नीति विकेन्द्रीकरण की नीति थी जिसमें उन्होंने ग्राम स्वराज की बात की। गाँव इतना स्वावलम्बी हो कि राज्य को हस्तक्षेप न करना पड़े। इसीलिए राज्य के विरुद्ध होते हुए भी ग्राम स्वराज की बात की। सभी गाँव को स्वशासी होना होगा और प्रेम तथा अहिंसा के आधार पर सहयोगिता के सिद्धान्त निर्धारित करने पड़ेंगे, तभी सच्चे अर्थ में राज्यविहीन राज्य की स्थापना होगी।

गाँधी जी की समस्त अवधारणाएँ उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों पर

PTO

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo: 9415376545

B.A PART-I (HONS) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date.11-05-2020

आधारित हैं। और उनमें कहीं भी अवसरवादिता या स्वार्थ की भावना नहीं है। गाँधी जो खुद भी करना चाहते थे या करवाना चाहते थे। वे इस बात का भी ध्यान रखने की राय देते थे कि साध्य की भर उपलब्धि किस प्रकार की जाय। वे साध्य और साधन दोनों की पवित्रता चाहते थे। कार्य चाहे जितनी अच्छा हो उसको प्राप्त करने के लिए गलत साधनों का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

गाँधी ने व्यक्ति की महत्ता को कभी नज़रंदाज नहीं किया। उन्होंने कहा कि धर्म, राजनीति, अर्थनीति इत्यादि से सर्वोच्च मनुष्य की सत्ता है। हम किसी मशीनी सिद्धान्त से सत्यान्वेषण नहीं कर सकते। मानव के अन्दर निहित ईश्वरीय तत्व का समुचित उद्घाटन ही समस्त मानव व्यवहारों का ध्येय होना चाहिए। इसके माध्यम से उन्होंने मानवीकरण की आवश्यकता को भी गहराई से महसूस किया।

गाँधी की प्रत्येक अवधारणा के मूल में शक्ति की अनुभूति होती है। वे सहज क्रियाशीलता को महत्व नहीं देते थे, इसलिए उनकी बातों का महत्व अकादमिक न होकर व्यवहारिक है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि गाँधी-दर्शन का महत्व अत्यधिक सार्वभौमिक है। क्या कोई अन्य मार्ग भी है जो गाँधी-मार्ग से अधिक उपयोगी और सहज है? शायद गाँधी द्वारा सुझाया ही एक ऐसा मार्ग है जिसे हम अपना सकते हैं। इसी मार्ग का अनुसरण करने से मानव अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है। गाँधी युग से लेकर वर्तमान समय में उनके दर्शन के महत्व की सार्थकता दिन-प्रतिदिन परिलक्षित होती रहती है।

समाप्त

Scanned with CamScanner